सरस्वतीनदीस्तोत्रम्।।

वा	ग्वादिनी	पा	पहरासि भे	द	चो	द्यादिकं	म	द्धर दिव्यमूर्ते।।
सु	शर्मदे	व	न्द्यपदेऽस्तुवि	ता	द	या च तेऽ	हो	मयि पुण्यकीर्ति।।१।।
दे	व्यै नमः	का	लजितेऽस्तु मा	त्रेऽ	यि	सर्वभा	अ	स्यखिलार्थदे त्वम्।।
वा	सोऽत्र ते	नः	स्थितये शिवा	या	त्री	शस्य पू	र्ण	स्य कलासि सा त्वम्।।२।।
नं	दप्रदे	स	त्यसुतेऽभवा	य	सू	क्ष्मां धियं	स	म्प्रति मे विधेहि।।
द	यस्व सा	र	स्वजलाधिसे	वि	नृ	लोकपे	र	म्मयि संनिधेहि।।३।।
स	त्यं सर	स्व	त्यसि मोक्षस	द्म	ता	रिण्यसि	स्व	स्य जनस्य भर्म।।
र	म्यं हि ते	ती	रमिदं शिवा	हे	नां	गीकरो	ती	ह पतेत्स मोहे।।४।।
स्व	भूतदे	वा	धिहरेऽस्मि वा	अ	चे	ता पि	प्र	ज्ञ उपासनात्ते।।
ती	व्रव्रतैर्	जे	तुमशक्यमे	व	तं	निश्चलं	चे	त इदं कृतं ते।।५।।
वि	चित्रवाग्	भि	र्झगुरूनसा	धू	ती	र्थाश्रया	त	त्वत एव गातुम्।।
र	जस्तनु	र्वा	क्षमते ध्यती	ता	सु	कीर्तिरा	य	च्छतु मे धियं सा।।६।।
चि	त्रांगि वा	जि	न्यघनाशिनी	य	म	सौ सुमूर्	ति	स्तव चाम्मयीह।।
त	मोऽघह	नी	रमिदं यदा	धी	ती	तिघ्न मे	के	ऽपि न ते यजन्ति।।७।।
स	द्योगिभा	व	प्रतिमं सुधा	म	नां	दीमुखं	तु	ष्टिदमेव नाम।।
मं	त्रो व्रत	ती	र्थमितोऽधिकं	हि	य	न्मे मतं	ना	स्त्यत एव पाहि।।८।।
त्र	यीतपो	य	ज्ञमुखा नितां	तं	ज्ञं	पांति ना	धि	घ्न इमेऽज्ञमार्ये।।
क	स्त्वल्पसं	ज्ञं	हि दयेत यो	नो	द	यार्ह आर्	यो	ज्झित ईश वर्ये।।९।।
स	मस्तदे	व	र्षिनुते प्रसी	द	धे	ह्यस्यके	वि	श्वगते करं ते।।
र	क्षस्व सु	ष्टु	त्युदिते प्रम	त्तः	स	त्यं न वि	श्वा	न्तर एव मत्तः।।१०।।
स्व	ज्ञं हि मां	धि	क्कृतमत्र वि	प्र	र	त्नैर्वरं	वि	प्रतरं विधेहि।।
ती	क्ष्णद्युतेर्	या	धिरुगिष्टवा	चो	स्व	स्थाय मे	रा	त्विति ते रिरीहि।।११।।
स्तो	तुं न चै	व	प्रभुरस्मि वे	द	ती	र्थाधिपे	ज	न्महरे प्रसीद।।
त्र	पैव यत्	सु	ष्टुतयेस्त्यपा	यात्	सा	जाड्यहा	ति	प्रियदा विपद्भ्यः।।१२।।

इति श्री.प.प.श्रीवासुदेवानंदसरस्वतीविरचितं श्रीसरस्वतीनदीस्तोत्रं संपूर्णम्।।